मेरा दोष नहीं था

कई बार नियति अपनी चाल चल जाती है,
गलती ना हो फिर भी, ढेरों सजा मिल जाती है।
सोचता रहता है प्राणी, कैसा विधि का लेख,
मेरा दोष नहीं था, पर पीड़ा मुझे मिली।

प्रबल हुई मति मंथरा , राम गये वनवास,
कैकयी की मंशा पर, मिला भरत को राज,
टूट गये दशरथ भी, बची न कोई आस,
मर्यादा श्री राम की, रखी सबकी लाज।

भरत सोचते रह गये, कैसा विधि का लेख,
मेरा दोष नहीं था, पर पीड़ा मुझे मिली।

जिसके पास कवच-कुण्डल था,पद उसको मिलना था,
जिसके भुजदण्डों में बल था, यश उसको मिलना था।
चाही संगत सज्जन की पर दुर्जन उसे मिले,
प्रबल हुई नियती कुछ ऐसी, संकट उसे मिले।

कर्ण सोचते रह गये, कैसा विधि का लेख,
मेरा दोष नहीं था, पर पीड़ा मुझे मिली।

सुख था, वैभव था जीवन मे, सब कुछ धूल हुआ।
जैसे ही सिद्धार्थ ने त्यागा, जीवन शूल हुआ।
एक पूँजी थी बालक उसका, वह भी दान दिया,
अपने पूर्ण सहयोग से गौतम को महान किया।

यशोधरा सोचती रही, कैसा विधि का लेख,
मेरा दोष नहीं था, पर पीड़ा मुझे मिली।

नवल किशोर गुप्त

यह चलन अच्छा नहीं

जब तप रही हो यह धरा,
बूँदें न पड़ती हो जरा,
मरुथल में आँधी चल रही हो,
शुष्क हो जीवन पड़ा।
मूक दर्शक बन खड़ा-

उम्मीद केवल दूसरों से,
यह चलन अच्छा नहीं।

जब सघनता बढ़ रही हो,
और दृष्टि मर रही हो,
द्वंद अंतर्मन छिड़ा हो,
हो तमस आगे अड़ा।
मूँद आँखों को खड़ा -

उम्मीद केवल दूसरों से,
यह चलन अच्छा नहीं।

चाल किस्मत चल रही हो,
हार एकदम खल रही हो,
क्यों न तू आगे बढ़ा!
और भाग्य से क्यों ना लड़ा?
बाँध हाथों को खड़ा -

उम्मीद केवल दूसरों से,
यह चलन अच्छा नहीं।

वाराणसी

ISSN:2583-8849